Q(1.) अध्ययन विषय के अर्थ, प्रकृति एवं गुणों के बारे में बतायें। या समझ एवं अध्ययन विषय में क्या संबंध है प्रकाश डालें।

Ans:- समझ एवं अध्ययन विषय - (Understanding and Academic Disciplines):-

पाठ्यचर्या ऐसी हो जो शिक्षार्थियों को ऐसे अनुभव उपलब्ध करवाए जो उसमें क्रमशः विवेक की क्षमता बढ़ाते हुए उसके ज्ञान को पुष्ट करे। विभिन्न विषयों के माध्यम से दुनिया को समझने का मौका दें। उनमें सौंदर्यबोध का ज्ञान हो और दूसरों के प्रति संवेदनशील बनायें, उन्हें काम करने और आर्थिक प्रक्रियाओं में भागीदारी करने दें।

ज्ञान की कल्पना संगठित अनुभव के रूप में की जा सकती है, जो भाषा, विचार शृंखला (या संकल्पना की संरचना) के माध्यम से अर्थ बताती है, जिसके माध्यम से हमें संसार को समझने में सफलता मिलती है। इसकी कल्पना गतिविधियों की शृंखला, शारीरिक कुशलता के साथ विचार, संसारी कार्यों में सहभागिता और चीजों की रचना करने के रूप में की जा सकती है। समय के साथ इंसान ने अपने लिए स्वयं ही ज्ञान की नयी विधियाँ विकसित की हैं, जिसमें सोचने के ढंग, अनुभव तथा कार्य निष्पादन और अतिरिक्त ज्ञान निर्माण के आयाम शामिल हैं। सभी बच्चे को इस सोच के बड़े भाग का पुनः सृजन करना पड़ता है, जो कि आगे की सोच और विश्व में सही प्रकार से कार्य करने के लिए आवश्यक होता है।

ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में भाग लेना, अर्थ खोजना और मानवीय कार्यों में भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। ज्ञान की यह व्यापक कल्पना हमें उस दिशा में ले जाती है, जो ज्ञान का परीक्षण केवल 'परिणाम' के अर्थों में न करके, ज्ञान सृजन की प्रक्रिया के नियमों के रूप में, उपलब्धता एवं उपयोग के अर्थों में भी करता है। यह कल्पना बताती है कि पाठ्यचर्या में जितना ध्यान सीखने की विषय-वस्तु पर दिया जाए उतना ही इस पर भी दिया जाए कि शिक्षार्थी पुनः सृजित ज्ञान से कैसे जुड़ते हैं और सीखने की प्रक्रिया क्या है।

समझ एवं अध्ययन विषय की प्रकृति

बुनियादी क्षमतायें - बच्चे की बुनियादी क्षमतायें वे होती हैं जो बोध के विकास, मूल्यों और कौशल-संबंधी वृहत आधार तैयार करती हैं।

(क) भाषा एवं अभिव्यक्ति के अन्य माध्यम - अर्थ निर्माण और दूसरे के साथ बाँटने के लिए आधार तैयार करना है। वे बोध और ज्ञान के विकास की संभावना तैयार करते हैं। बच्चे के लिए भाषा का विकास, अस्मिता, बोध के विकास और दूसरों के साथ जुड़ने की क्षमता के विकास का समानार्थी होना है। न केवल लिपिक

वाली मौखिक भाषा, बल्कि लिपिविहीन भाषा, सांकेतिक भाषायें, ब्रेल जैसी लिपि और प्रदर्शन कलायें भी अर्थ और अभिव्यक्ति का आधार तैयार करती है।

(ख) संबंध बनाना और कायम रखना - समाज, प्रकृति एवं स्वयं के साथ भावनात्मक प्रगाढ़ता, संवेदनशीलता और मूल्यों के साथ लगातार संबंध बनाना, जीवन में सार्थकता लाता है। इसकी भावनात्मक वस्तु एवं उद्देश्य देता है। यह नैतिकता का भी आधार है।

(ग) कार्य और क्रिया संबंधी क्षमता - इसमें शारीरिक समन्वय व विचार और संकल्प से तालमेल, कौशल और समझ के आधार पर किसी लक्ष्य को पाने या कुछ अर्जित करने के दिशानिर्देश शामिल है। साथ ही इसमें उपकरणों और तकनीकों की देखभाल, वस्तुओं और अनुभवों का उपयोग व उन्हें व्यवस्थित करना और संप्रेषण भी शामिल होता है।

समझ के प्रकार / रूप (Type of Understanding)

ज्ञान के पुष्टीकरण व औचित्य को स्थापित करने की प्रक्रिया में जिन अवधारणाओं व अर्थों का उपयोग किया जाता है, उनके आधार पर भी ज्ञान का वर्गीकरण किया जा सकता है। प्रत्येक का अपना 'आलोचनात्मक चिंतन', ज्ञान को जाँचने व उसकी पुष्टि करने का तरीका और अपने प्रकार की रचनात्मकता होती है।

गणित की अपनी विशिष्ट अवधारणायें होती है जैसे - मूलांक, वर्गमूल, भिन्न, प्रणीक आदि - आदि। उसकी भी वैधता निर्धारण की अपनी प्रक्रिया होती है, जैसे कि जो सिद्धांत स्थापित किया जाना है उसका कदम-दर-कदम प्रदर्शन। गणित में पुष्टीकरण की प्रक्रिया कभी अनुभाविक नहीं होती है और न ही अवलोकन या प्रयोग पर आधारित है।

गणित की तरह विज्ञान की भी अपनी अवधारणायें होती है। बहुधा वे सिद्धांत के माध्यम से एक दूसरे से जुड़े होते है और प्राकृतिक विश्व की व्याख्या करने का प्रयास करते है। अवधारणाओं में अणु, चुंबकीय क्षेत्र, कोशिका और न्यूरॉन आते है। वैज्ञानिक परख में सैद्धांतिक आधारों पर की गई घोषणाओं को परीक्षण के आधार पर वैध बताया जाता है जिसमें अक्सर उपकरणों और नियंत्रण की सहायता ली जाती है।

सामाजिक विज्ञानों तथा मानविकी की अपनी अवधारणायें होती है जैसे - समुदाय, आधुनिकता, संस्कृति, अस्मिता और राजनीति। सामाजिक विज्ञानों का लक्ष्य मनुष्यों और समाज में मौजूद मानव समूहों की एक सामान्य और समीक्षात्मक समझ विकसित करना है।

(1)(2.) शैक्षिक अध्ययन विषय के अर्थ से आप क्या समझते हैं? विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित अध्ययन विषयों की चर्चा करें।

Ans:- अध्ययन विषय को अंग्रेजी भाषा में Discipline कहते हैं। Discipline जिसका शाब्दिक अर्थ है विषय अध्यापन / शिक्षण / नियंत्रण / अनुशासन आदि।

अध्ययन विषय का अर्थ है ज्ञान की विभिन्न अवधारणायें जो एक विद्यार्थी को उसके लक्ष्य प्राप्ति में सहायक हो।

आज विश्व में ज्ञान का प्रसार बहुत तेजी से हो रहा है। ज्ञान प्राप्ति के अनेक साधन व विषय है। प्रत्येक विषय अपने आप में परिपूर्ण है। शैक्षिक अध्ययनों में अनेक विषय को सम्मिलित किया गया है। अध्ययन के पश्चात यह पाया गया है कि विद्यार्थी का एक विषय - दूसरे विषय से संबंधित है। अतः शैक्षिक अध्ययन का विशेष अर्थ है ज्ञान। ज्ञान के अनेक संदर्भ हैं परन्तु हम यहाँ ज्ञान को विभिन्न विषयों के रूप में आत्मसात करेंगे।

ज्ञान की शाखायें:-

दर्शनशास्त्र	अर्थशास्त्र
मनोविज्ञान	वाणिज्य
समाजशास्त्र	विज्ञान
सामाजिक विज्ञान	गणित
हस्तशिल्प एवं मूर्तिकला	भौतिकी
भाषा एवं मातृभाषा	रसायन शास्त्र
इतिहास	जीव विज्ञान
भूगोल	प्राणी विज्ञान

अध्ययन विषय की विशेषतायें:-

1. अध्ययन विषय एक मात्र कोरी कल्पना नहीं है अपितु यह एक वैज्ञानिक विचारधारा है जोकि शोध पर आधारित है।
2. अध्ययन विषय में ज्ञान के विभिन्न विषयों को वैज्ञानिक कसौटी पर मापा जाता है।
3. अध्ययन विषय के अन्तर्गत एक विषय - दूसरे विषयों से संबंधित होता है एवं दो या अनेक विषय मिलकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं।
4. अध्ययन विषय की परिकल्पना को वैज्ञानिक माध्यम से विभिन्न सामाजिक व्यक्तियों द्वारा जैसे - वैज्ञानिक, इंजीनियर्स, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक द्वारा विभिन्न पैमाने की कसौटी पर परखा जाता है तथा नए ज्ञान का सृजन नए

(घ) प्रबंधन (Management) – प्रबंध, विभिन्न विद्वानों ने प्रबंध को इसकी विशेषता के आधार पर अलग-अलग ढंग से परिभाषित किया है। कुछ विद्वानों ने प्रबंध को परिभाषित एक ऐसी प्रक्रिया से किया है जिसके अंतर्गत प्रबंध को "दूसरे लोगों से कार्य करवाने की कला माना है।" इसी प्रकार कुछ विद्वानों ने माना है कि प्रबंध का संबंध "निर्णय लेने से है"

प्रबंध की परिभाषा :-

हैरोल्ड कून्टज के अनुसार - " प्रबंध औपचारिक रूप से संगठित समूहों में अन्य व्यक्तियों के साथ मिलकर कार्य करने तथा करवाने की कला है।"

एफ० डब्ल्यू टेलर के अनुसार - " प्रबंध यह जानने की कला है कि आप क्या करवाना चाहते हैं और इसके बाद यह देखना कि वे इसे सर्वोत्तम एवं मितव्यता पूर्ण विधि से करें।"

विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रबंध दूसरों से कार्य करवाने की कला है जिससे कार्यकुशलता पूर्वक तथा प्रभावपूर्ण तरीकों से किया जाता है।

(ङ) अर्थशास्त्र (Economics) – मनुष्य जब जन्म लेता है तो जन्म से ही उसे भिन्न-भिन्न वस्तुओं की आवश्यकता होती है, वस्तु की यह आवश्यकता जन्म से लेकर मृत्यु तक होती रहती है। रोटी, कपड़ा और मकान उसकी मूलभूत आवश्यकतायें हैं तो इसके अलावा भी उसे स्थिति के अनुसार अलग-अलग वस्तुओं की आवश्यकता होती है। जैसे - पढ़ने के लिए पाठ्य-सामग्री, खेलने की सामग्री, मनोरंजन से संबंधी सामग्री आदि। मनुष्य की आवश्यकता की पूर्ति के लिए कुछ आवश्यक वस्तुयें उसे प्रकृति से बिना परिश्रम को मिल जाती हैं - जैसे - धूप, वर्षा, हवा। इन्हें अनार्थिक वस्तुयें कहा जाता है। इसके विपरीत भोजना, कपड़ा, दैनिक उपयोग की अन्य वस्तुओं, उसे परिश्रम से ही प्राप्त होती हैं। ऐसी वस्तुओं को आर्थिक वस्तुयें कहा जाता है। आर्थिक वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए किया गया परिश्रम आर्थिक क्रिया कहलाता है। सामान्य अर्थों में मनुष्य के आर्थिक क्रियाओं के अध्ययन करने की शाखा को अर्थशास्त्र कहा जाता है।

'अर्थशास्त्र' दो शब्दों 'अर्थ' तथा 'शास्त्र' से मिलकर बना है। अर्थ से तात्पर्य 'धन' से है तथा शास्त्र से तात्पर्य विज्ञान से है। अर्थात "विज्ञान की वह शाखा जिसके अन्तर्गत मनुष्य की धन संबंधी क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है अर्थशास्त्र कहलाती है।"

विषय के रूप में किया जाता है।

(5) महाविद्यालय, विश्वविद्यालय एवं ज्ञान प्राप्ति व सृजन के विभिन्न संस्थान अध्ययन विषयों के माध्यम से नए विषय / ज्ञान को नई पीढ़ी को समर्पित कर पुनः नए ज्ञान के खोज में लग जाते हैं तथा इस प्रकार से पीढ़ी दर पीढ़ी नए विषयों के माध्यम से हस्तान्तरित होता रहता है।

(6) अध्ययन विषयों की अपनी एक समझ होती है। जिसको वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, गणितज्ञ आदि अनेक महानुभाव आपस में मिलकर विभिन्न विषयों के अध्ययन के उपरान्त नई भाषा, समझ, शब्दावली, तकनीकी विकसित करते हैं। जैसे कि स्वास्थ्य के अध्ययन करने के लिए अल्ट्रासाउंड, मशीन में प्रयुक्त विभिन्न उपकरण का निर्माण विभिन्न व्यक्तियों द्वारा किया जाता है, तब जाकर अल्ट्रासाउण्ड या अन्य मशीनों का उपयुक्त परिणाम घोषित होता है। इसके उपरान्त ही मरीज का सम्पूर्ण इलाज संभव हो सकेगा।

कार्य अनुभव :- (Work Ex perience)

शिक्षा को छात्रों के विकास का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है लेकिन आधुनिक शिक्षा प्रणाली दोषपूर्ण मानी जाती है। क्योंकि यह छात्रों का सामाजिक विकास करने में तो सहायता प्रदान करती है। लेकिन आर्थिक समस्याओं का समाधान नहीं कर पाती। आज की शिक्षा प्रणाली छात्रों का मानसिक विकास कर उन्हें उच्च डिग्री प्रदान करने में सहायता प्रदान करती है। लेकिन ये डिग्री उन्हें किसी भी कार्य का अनुभव प्राप्त न कराने के कारण नौकरी दिलाने में सहायक नहीं हो पाती, जो कि वर्तमान समय की माँग है इसलिए बच्चों को कार्यानुभव की शिक्षा प्रदान करना आवश्यक हो जाता है। कार्यअनुभव आत्मनिर्भरता की ओर पहला कदम है जिसका अभिप्राय है करके सीखना। हमारी शिक्षा प्रणाली का यह दोष प्रायोगिकता की कमी है। इसके द्वारा मनुष्य हाथ से कार्य करने के साथ कुछ धन अर्जित करना भी सीख जाता है।

कार्यानुभव शब्द ऐसी क्रियाओं की ओर संकेत करता है जो छात्र के भावी जीवन में एवं समाज की दृष्टि से सार्थक एवं लाभपूर्ण है। कार्य अनुभव शिक्षार्थी और समुदाय की आवश्यकताओं की पूर्ति से संबंधित उद्देश्यपूर्ण व अर्थपूर्ण हस्तकार्य है। जिसका परिणाम किसी वस्तु निर्माण अथवा ऐसे कार्य के रूप में है जो समुदाय के लिए उपयोगी सिद्ध हो।

Q(3.) शिक्षक का शैक्षिक अध्ययन विषय संबंधी दृष्टिकोण, अध्ययन विषय के अध्ययन में क्या भूमिका है? एक आदर्श शिक्षक के क्या गुण होते हैं।

Ans :- अध्यापक (Teacher) - अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया की धुरी है। जब शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया की बात चलती है तो एक ऐसा व्यक्ति हमारे सामने खड़ा होता है जो शिक्षा प्रक्रिया को विद्यार्थियों के लिए सुविधापूर्ण बनाता है और पग-पग पर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करता है। ऐसे व्यक्ति को गुरु अथवा अध्यापक कहा जाता है।
एडम्स के शब्दों में - "यदि अध्यापक को वास्तव में मनुष्य का निर्माता बनना है तो अपने व्यक्तित्व, चरित्र तथा बुद्धि के विशेष गुणों का होना आवश्यक है।"
अध्यापक के गुण :- अध्यापक का व्यक्तित्व अच्छा होना चाहिए। व्यक्तित्व एक ऐसा शब्द है जिसका निर्माण बहुत से गुणों एवं विशेषताओं से होता है। अध्यापक की सफलता या असफलता का निर्धारण करने में व्यक्तित्व का बहुत बड़ा योगदान होता है। व्यक्तित्व में बाह्य आकृति, अच्छे तौर तरीके, स्पष्ट व मधुर आवाज, भाषा पर नियंत्रण, मानसिक स्वास्थ्य, धैर्य एवं आत्मसंयम आदि देखे जाते हैं। व्यक्तित्व गुणों के साथ-साथ उसमें व्यवसायिक गुण भी होने चाहिए जैसे - विषय का विस्तृत ज्ञान, सेवाकालीन प्रशिक्षण, मौलिकता पर्याप्त सामान्य ज्ञान, सेवा पूर्व प्रशिक्षण, सतत प्रयत्नशीलता आदि।
शिक्षक का शैक्षिक अध्ययन विषय संबंधी दृष्टिकोण :-
शिक्षक को शिक्षा की स्कूली व्यवस्था की उभरती माँगों के प्रति अधिक संवेदनशील होना चाहिए। उसे शिक्षकों को इसके लिए तैयार करना चाहिए कि वे निम्नलिखित रूप में अपनी भूमिका निभायें :-

1. उनको उत्साहवर्धक, सहयोगी और मानवीय होना चाहिए जिससे विद्यार्थी अपनी संभावनाओं का पूर्ण विकास कर जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी भूमिका निभायें।
2. ऐसे व्यक्तियों के समूह का सक्रिय सदस्य बनें, जो लगातार, सामाजिक और विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर सजगता से पाठ्यचर्या सुधार में प्रयासरत हों।
3. सीखना किस प्रकार होता है, इसकी समझ उसमें हो और वह उसके अनुकूल माहौल बनाए।
4. ज्ञान को व्यक्तिगत अनुभव के रूप में समझें, जो सीखने-सीखाने के साझे अनुभव के रूप में प्राप्त किया जाता है, न कि पाठ्यपुस्तकों के बाह्य यथार्थ के रूप में।
5. उन सामाजिक, पेशेवर और प्रशासनिक संदर्भों के प्रति उसमें संवेदनशीलता हो, जिनमें उसे काम करना पड़ता है।

(6) इस प्रकार की उपयुक्त क्षमताओं का विकास वह कर सके जिससे वास्तविक स्थितियों में उसकी न केवल उपरोक्त समझ हो, बल्कि वह उसकी रचना भी कर सके।

(7) भाषा की गहरी समझ और दक्षता हासिल करे।

(8) अपनी आकांक्षाओं, स्वयं समझ, क्षमताओं और रुझानों को पहचाने

(9) मूल्यांकन की सतत शैक्षिक प्रक्रिया माने।

(10) कार्य के द्वारा विभिन्न विषयों का ज्ञान, विविध मूल्यों और विविध कौशलों के विकास के साथ किस प्रकार प्राप्त होता है इसकी शिक्षा देना सीखे।

अध्ययन विषय में विषय अध्यापक की भूमिका :-

अध्ययन विषय के संदर्भ में विषय अध्यापक के पक्ष में निम्नांकित तर्क प्रस्तुत किये जा सकते हैं।-

(1) इस प्रणाली के अंतर्गत छात्रों को अनेक विषय विशेषज्ञों द्वारा शिक्षण प्रदान किया जाता है।

(2) विषय अध्यापक अपने विषय के शिक्षण के लिए उपयुक्त विभिन्न शिक्षण पद्धतियों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर सकता है और विषय शिक्षण के लिए अनेक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सर्वोत्तम पद्धति का अलग-अलग छात्र समूहों के शिक्षणों में प्रयोग कर सकता है।

(3) विषय अध्यापक प्रणाली के अन्तर्गत विभिन्न विषयों की प्रयोगशाला की स्थापना करना संभव होता है। विषयगत प्रयोगशालाओं के द्वारा वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक शिक्षण संभव होता है।

(4) विषय अध्यापक अपने विषय के शिक्षण के संबंध में वर्ष भर के लिए सुनियोजित योजनायें बना सकते हैं।

(5) वह अपने विषय के शिक्षण से संबंधित सहायक सामग्री के निर्माण तथा प्रयोगों पर चिन्तन कर सकता है। उसकी सहायता से शिक्षण को आकर्षक तथा रोचक बनाया जा सकता है।

(6) विषय अध्यापक सम्पूर्ण कक्षाओं को एक ही विषय पढ़ाता है। वह उस विषय का पण्डित होता है। फलत: वह उस विषय को विश्वास के साथ पढ़ा सकता है। उसका सारा ध्यान तथा प्रयास एक ही विषय के शिक्षण पर केन्द्रित रहते हैं।

③ (4.) शिक्षाशास्त्रीय (अध्ययन) विषय के विभिन्न आधारों को विस्तार से चर्चा करें।

Ans :- शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में अध्ययन विषय का महत्वपूर्ण योगदान है और यह भी देखा गया है कि जैसे-जैसे समय परिवर्तित होता है तो शिक्षा के अध्ययन विषय भी परिवर्तित हो जाते हैं। अध्ययन विषय के उद्देश्यों का निर्माण कुछ मुल्यों को लेकर किया जाता है जिन्हें अध्ययन विषय का आधार माना जाता है। अध्ययन विषय के निम्नलिखित आधार हैं :-

① अध्ययन विषयों के ऐतिहासिक आधार (Historical foundation of Disciplines)

शिक्षा के जो वर्तमान अध्ययन विषयों का जो स्वरूप हम देख रहे हैं उसके पीछे इतिहास का भी महत्वपूर्ण स्थान है। जब हम शिक्षा के अध्ययन विषयों के इतिहास पर नजर डालते हैं तो, वैदिककालीन अध्ययन विषयों का स्वरूप अलग था, उसमें थोड़ा परिवर्तन कर बौद्ध कालीन शिक्षा के अध्ययन विषय बने, इसके बाद मुस्लिमशासन काल के अध्ययन विषयों में भिन्नता आती है तथा ब्रिटिश कालीन शिक्षा के अध्ययन विषयों में विभिन्न आयोगों ने अपने सुझावों के आधार पर समय-समय पर परिवर्तन किए जो तत्कालीन समाज की आवश्यकता थी। स्वतंत्रता के पश्चात 1964-66 में कोठारी आयोग ने सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा प्रस्तुत की। जिसमें त्रिभाषा सूत्र, कार्य-अनुभव, स्वास्थ्य शिक्षा, कला, विज्ञान आदि को स्थान दिया गया। इसके बाद 1986 की शिक्षा नीति में 10+2+3 संरचना तथा विज्ञान तकनीकी के ज्ञान पर विशेष ध्यान दिया गया।

उपरोक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि अध्ययन विषयों को जो स्वरूप आज हम देख रहे हैं वह अचानक ही नहीं बना है। इसमें धीरे-धीरे समाज की आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन होता रहा है।

② अध्ययन विषयों के दार्शनिक आधार (Philosophical Foundation of Disciplines)

बालक की शिक्षा व्यवस्था समाज के द्वारा होती है। अतः अध्ययन विषय का समाज एवं व्यक्ति की प्रकृति से संबंधित होना स्वाभाविक है और प्रत्येक समाज विद्यालय से भी यह अपेक्षा रखता है कि उसकी संस्कृति व सभ्यता का हस्तान्तरण अगली पीढ़ी में हो इसलिए अध्ययन विषय विकास की प्रक्रिया में समाज, सांस्कृतिक विरासत तथा व्यक्ति पर जोर देना आवश्यक होता है क्योंकि ये तीनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, और दर्शन अध्ययन विषयों का मेरुदंड है। क्या पढ़ाया जाय? क्या न पढ़ाया जाय? इस प्रश्न का उत्तर व्यक्ति और समाज अपनी दार्शनिक मान्यता के आधार पर देता है। और पाठ्य सामग्री का चयन शिक्षा के निश्चित उद्देश्यों व निश्चित आदर्शों के आधार पर किया जाता है।

③ अध्ययन विषयों के मनोवैज्ञानिक आधार (Psychological foundation of Disciplines)

मनोविज्ञान ने शिक्षा के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया है, वर्तमान समय में शिक्षा-

प्रणाली व उसके अध्ययन विषय को देखें तो शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर बच्चों की रुचि, क्षमता, योग्यता, आकाँक्षा, अनुभव आवश्यकता तथा प्रवृत्तियों का ध्यान रखा जाता है। और अध्ययन विषय के निर्माण करते समय भी उपरोक्त बातों पर ध्यान दिया जाता है। जिसे हम सामान्य रूप से अध्ययन विषय के मनोवैज्ञानिक आधार कहते हैं। मनोविज्ञान के विकास से पूर्व बालकों की शिक्षा व पाठ्यक्रम, शिक्षकों के आदर्शों, पुस्तकीय ज्ञान, दमनात्मक अनुशासन प्रचलित था। वहाँ बालकों की रुचियों, आकाँक्षाओं, योग्यताओं का दमन किया जाता था।

(4) अध्ययन विषयों के सामाजिक आधार (Sociological Foundation of Disciplines)

मनुष्य एक सामाजिक बुद्धिजीवी प्राणी है। वह समाज में रहकर नित्य नये-नये कार्य करता रहता है और शिक्षा व्यक्ति को सामाजिक प्राणी बनाने में सहायता करती है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को सामाजिक जीवन के लिए तैयार करना है। और यह भी स्पष्ट है कि पाठ्यक्रम के द्वारा बालक को सामाजिकता की शिक्षा प्रदान की जा सकती है। यदि हम मानव व्यवहार को देखते हैं तो हम पाते हैं कि मनुष्य अपने संवेगों के आधार पर प्रेम, घृणा, क्रोध, स्नेह आदि व्यवहार करता है, और शिक्षा द्वारा संवेगों का प्रशिक्षण किया जाता है। विद्यालय में जो हम सीखते हैं। वह प्रायः शिक्षकों और शिक्षार्थियों के बीच विभिन्न स्थलों जैसे - कक्षा, खेल का मैदान, सभा आदि में हुई प्रत्यक्ष अंतः क्रिया का परिणाम होता है। इस प्रकार सम्पूर्ण शिक्षा सामाजिक प्रवृत्तियों से संबद्ध रहती है।

(5) अध्ययन विषय के साँस्कृतिक आधार (Cultural Foundation of Disciplines)

संस्कृति के अंतर्गत व्यक्तियों के रहने का ढंग, जीवन जीने का तरीका, उनकी मान्यतायें, परम्परायें, रीति-रिवाज, उनका संगीत, नृत्य, पारिवारिक संगठन आदि आते हैं। जिसका प्रत्यक्ष संबंध बालक के साथ होता है। इन सभी तत्वों से अध्ययन विषय का निर्माण होता है। एवं यह प्रत्येक समाज में पाई जाती है। तथा इनका उदय संस्कृति से ही होता है। व्यावसायिक प्रयोजन के लिए शिक्षा हमेशा निश्चित सामाजिक स्तर के व्यक्तियों की आवश्यकताओं से संबंधित रही। पश्चिमी देशों में उच्च वर्ग के परिवारों के पुत्र निजी विद्यालयों अथवा उनके द्वारा निर्मित विशेष विद्यालयों में अध्ययन करते हैं। वे उच्च वर्ग के व्यवसायों में प्रशिक्षित होते हैं। इससे स्पष्ट है कि वर्ग संस्कृति के अनुरूप अध्ययन विषयों के स्वरूप का निर्माण होता है।

Q(5.) अनौपचारिक शिक्षा से आप क्या समझते है ? एवं अन्तर्विषयता से आप क्या समझते है ?

Ans.- अनौपचारिक शिक्षा (Informal Education)

अनौपचारिक शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा से है जो प्राकृतिक रूप से घटित होती है। अनौपचारिक शिक्षा में पहले से ही कोई योजना नहीं होती है। वह तो शिक्षार्थी को कहीं पर भी किसी भी समय पर प्राप्त हो सकती है। अनौपचारिक शिक्षा का कोई नियम निश्चित नहीं होता। न ही शिक्षा देने वाला निश्चित होता और न ही शिक्षा प्राप्त करने वाला निश्चित होता है। स्वत: ही शिक्षार्थी के पास पहुँच जाती है।

अनौपचारिक शिक्षा वह है जिसके लिए कोई निश्चित समय-सारणी स्थान या पाठ्यक्रम पहले से निश्चित नहीं होता है। हमारे देश में अनौपचारिक शिक्षा का उद्देश्य उन लोगों को शिक्षित करना है जो गरीबी तथा अन्य कारणों से औपचारिक शिक्षा से वंचित रह गये हों इनमें अधिकांश अनुसुचित जातियों व अनुसुचित जनजातियों जैसे-उपेक्षित वर्गों तथा शहरों में गंदी बस्तियों एवं दूर-दराज के गाँवों में रहने वाले लोगों के बच्चे शामिल है। अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए कोई निश्चित आयु नहीं होती है। न ही कोई योजना होती है न कोई उद्देश्य होता है। व्यक्ति अपने परिवार, मित्र, पड़ोस, मनोरंजन के साधन के द्वारा हमेशा कुछ न कुछ सिखता रहता है।

भारत में 1975-76 में 15 से 25 वर्ष की आयु के लोगों के लिए अनौपचारिक शिक्षा के नाम से बहुत बड़ा कार्यक्रम चलाया गया। राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों की भाँति इसका उद्देश्य वंचित वर्ग के लोगों को सार्थक शिक्षा प्रदान करना है। महात्मा गाँधी की "नई तालिम" या बुनियादी शिक्षा के आधार पर इसमें कोई हुनर सीखने की पद्धति अपनायी गई। भारत में पहला स्कूल खुले हुए 150 वर्ष हो गये है लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ती के 40 वर्ष बाद भी देश की आधी जनसंख्या ही साक्षर हो पायी थी जिनमें से आधे से अधिक निरक्षर केवल स्त्रियाँ व लड़कियाँ ही थी।

इस प्रकार विभिन्न अवधारणाओं को जानने के बाद हम निष्कर्ष पर पहुँचते है कि शिक्षा व्यक्ति की क्षमताओं का समुचित विकास है जिससे व्यक्ति अपना विकास कर जीवन को सही दिशा दिखा सके। शिक्षा निरंतर विकास की प्रक्रिया है तथा व्यवहार का रूपांतरण है। समायोजन की क्षमता भी शिक्षा पर ही आधारित है।

अन्तर्विषयता (Interdisciplinary) - अंतर्विषयकता दो या दो से अधिक

शैक्षिक विषयों के मिश्रित अध्ययन क्षेत्र को कहते है। उदाहरण के लिए - भूमण्डलीय ऊष्मीकरण में भौतिक, भूगोल, जीव विज्ञान और कई अन्य विद्या शाखाओं का एक अंतर्विषयक क्षेत्र है। यह क्षेत्र सोच एवं अपनी सीमाओं को लाँघकर कुछ अलग क्षेत्र का निर्माण करता है। अंतर्विषयक एक संगठनात्मक इकाई के रूप में अपनी पारम्परिक सीमाओं को शैक्षिक विषय और विद्यालय विषय के मध्य तोड़ते हुए एक नये व्यवसायिक विषय की जरूरत को पूरा करता है।

एक अंतर्विषयक का क्षेत्र, शिक्षा एवं शिक्षाशास्त्री प्रशिक्षण पर लागू होता है जिसके माध्यम से उन सभी स्थापित शैक्षणिक विषयों का एवं पारम्परिक विषयों का अध्ययन किया जाता है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत अनुसंधानकर्ता, विद्यार्थी एवं अध्यापक सभी आपस में शैक्षणिक विषय, व्यवसायिक, तकनीकी की माध्यम से जुड़े होते है, जिनका उद्देश्य एक निश्चित एवं साँझा उद्देश्य को पूरा करना है।

उदाहरण के रूप में Global Warming के माध्यम से भिन्न-न विषय अध्ययन एवं उनकी साँझा समस्या को समझा जा सकता है।

अंतर्विषयक क्षेत्र का उपयोग उन शैक्षणिक विषय पर अधिक लागू किया जाता है जोकि अनुसंधान संस्थानों में अपेक्षित और पारम्परिक विषयक ढाँचा में उपयुक्त नहीं बैठते। जैसे कि स्त्रियों एवं संघ जातिय अध्ययन क्षेत्र।

विषय रूप से अंतर्विषयकता क्षेत्र का उपयोग शैक्षणिक अध्ययन से संबंधित जहाँ अनुसंधानकर्ता एक से अधिक विषयों पर अनुसंधान करते है और समस्या समाधान करते है इसके साथ साथ बहुआयामी शैक्षणिक पारम्परिक विषय का भी अध्ययन किया जाता है। उदाहरण के रूप में जैसे कि जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, भू-विज्ञान और राजनीतिक विज्ञान।

विकास एवं उद्गम

यद्यपि अंतर्विषय और अंतर्विषयकता 20वीं शताब्दी की देन है फिर भी यह विषय में ऐतहासिक एवं ग्रीक दार्शनिक की छाप है।

Q(6.) आकलन एवं मूल्यांकन किस प्रकार से विद्यालय के सुधार / विकास में मददगार है?

था

विद्यालय आधारित आकलन किस प्रकार से विद्यालय मूल्यांकन में सहायक है?

Ans:- आँकलन - आँकलन एक संवादात्मक तथा रचनात्मक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा शिक्षक को यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थी का उचित अधिगम हो रहा है अथवा नहीं।

आँकलन के द्वारा ही अध्यापक सभी बच्चों की समस्याओं का समय-समय पर ~~आँकलन~~ मूल्यांकन करते रहते हैं एवं उनका समाधान हेतु सुझाव ढूँढते हैं। आँकलन के द्वारा बच्चों को समय-समय पर अपने प्रदर्शन की जानकारी प्राप्त होती रहती है। जिससे वह अपने उत्तम प्रदर्शन के लिए अधिक से अधिक समय को अधिगम प्रक्रिया में लगाना चाहते हैं।

मूल्यांकन - मूल्यांकन एक योगात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी पूर्व निर्मित शैक्षिक कार्यक्रम अथवा पाठ्यक्रम की समाप्ति पर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात की जाती है।

इसका उद्देश्य मूल्य निर्धारण करना होता है। शैक्षिक संदर्भ में मूल्यांकन का उद्देश्य निर्धारित पाठ्यक्रम की समाप्ति पर छात्रों की उपलब्धि को ग्रेड अथवा अंक के माध्यम से प्रदर्शित करना है। यह पाठ्यक्रम की समाप्ति पर होने वाली प्रक्रिया है। यह शिक्षण शास्त्र का हिस्सा है, जो पढ़ने - पढ़ाने के अंत में उपलब्धियों के वर्गीकरण के लिए किया जाता रहा है।

विद्यालय - आधारित आकलन :- विद्यालय आधारित आकलन को निम्न बिंदुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

① सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी० सी० ई०) - यह महसूस किया गया है कि (क) बच्चों पर से दबाव कम करने (ख) मूल्यांकन को व्यापक और नियमित बनाने (ग) शिक्षकों को रचनात्मक शिक्षण का अवसर देने (घ) निदान के लिए सामान उपलब्ध कराने और श्रेष्ठतर योग्यता वाले विद्यार्थियों को तैयार करने के लिए स्कूल आधारित मूल्यांकन व्यवस्था उपलब्ध हो। यह योजना सरल, लचीली और एक संभ्रांत स्कूल से लेकर ग्रामीण या आदिवासी क्षेत्र में स्थित किसी भी प्रकार के स्कूल में लागू करने योग्य हो। योजना के मुख्य सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक स्कूल को अपने शिक्षकों को शामिल करते हुए, उन शिक्षकों द्वारा स्वीकार्य एक उपयुक्त सरल योजना का विकास करना चाहिए।

② सी० सी० ई० प्रमाणपत्र को जारी करना - सी० सी० ई० को प्रभावी बनाने के लिए राज्य शिक्षा बोर्ड द्वारा जारी स्कूल - परित्याग प्रमाण - पत्र में स्कूल - आधारित आकलन को

भी कुछ महत्व दिया जाना चाहिए। स्कूल में सभी क्षेत्रों में विद्यार्थी के प्रदर्शन का प्रमाण-पत्र ~~को साथ दिया~~ बोर्ड के प्रमाण-पत्र के साथ दिया जाना चाहिए। मूल्यांकन के दोनों तरीके अर्थात आंतरिक और बाह्य, बोर्ड द्वारा जारी प्रमाण पत्र में, आदर्शतः अलग तरीके से दिखाये जाने चाहिए। प्रारंभ में दसवीं कक्षा में 20% भार दिया जा सकता है।

③ आंतरिक आंकलन में ईमानदारी बरतना – यह एक गंभीर प्रश्न है कि स्कूलों की आंतरिक ग्रेडिंग में ईमानदारी कैसे बरती जाए और इसको सुनिश्चित किए बिना बोर्ड के अंकपत्रों के अंतिम उपयोगकर्ताओं में इसके प्रति रुचि उत्पन्न नहीं होगी।

प्रत्येक विषय में आंतरिक रूप से आकलित कार्य के अभिकलित नमूने को बोर्ड के पास अवश्य भेजना चाहिए। ऐसे मामलों में जब बोर्ड गुणवत्ता से संतुष्ट हो, उन्हें इसके अनुमोदन का अंक मिलना चाहिए। अन्यथा अंकतालिका में सी०सी०ई० द्वारा दिए गए अंक को इस टिप्पणी के साथ पढ़ना चाहिए – "बिना बोर्ड प्रमाणीकरण के स्कूल द्वारा घोषित", ऐसे मामलों में जहाँ गुणवत्ता का पूरा ध्यान रखा गया है, लेकिन दिये गये अंक अत्यधिक हैं तो सी०सी०ई० के लिए स्कूल औसत का उल्लेख किया जाना चाहिए।

④ प्रायोगिक परीक्षायें :– अधिकांश बोर्डों में, स्कूलों द्वारा विज्ञान विषयों की प्रायोगिक परीक्षा में मूल्यांकन का दुरुपयोग किया जाता है, जहाँ अधिकांश विद्यार्थी को (यहाँ तक कि प्रायोगिक परीक्षा लिए बिना ही), पूर्णांक के बराबर या उससे थोड़ा ही कम अंक मिलता है। जब बोर्ड स्कूल-आधारित मूल्यांकन के नमूनों की जाँच और नियंत्रण की अपनी जिम्मेवारी को छोड़ देता है, तो ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है। यहाँ सुझाये गए जांच के तरीकों को अविलंब लागू किए जाने कि जरूरत है। अगर वे ऐसा नहीं करते हैं तो, स्कूल आधारित प्रायोगिक परीक्षाओं को समाप्त कर देना चाहिए और विज्ञान विषयों में अंक पूरी तरह सैद्धांतिक परीक्षाओं के आधार पर दिये जाये। तब उसमें प्रयोगों की योजना बनाने पर एक खंड होगा।

उसके बाद यह निष्कर्ष निकालना कि अच्छे प्रयोग और प्रायोगिक योग्यतायें वैज्ञानिक उपक्रम का केन्द्र बिन्दु हैं, दुर्भाग्यपूर्ण होगा। जब तक प्रयोगशाला मूल्यांकन को कम दोषपूर्ण नहीं बनाया जायेगा देश कि वैज्ञानिक जनशक्ति की गुणवत्ता को गंभीर खतरा है।

Q(7.) बहुमाध्यम (Multimedia) से आप क्या समझते हैं? इसका शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया में क्या महत्व है? वर्णन करें।

Ans:- बहुमाध्यम (Multimedia) :-

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एक जटिल प्रक्रिया है। आज के इस वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया को समझना, उसे प्रभावशाली बनाना तथा विद्यार्थियों एवं समाज की आवश्यकताओं को पूरा करना किसी एक विधि, प्रविधि या माध्यम से सम्पूर्ण नहीं हो सकता। संचार तकनीकी के क्षेत्र में विस्तार होने के कारण विद्यार्थी के सीखने की प्रक्रिया में सुधार एवं परिवर्तन आया है।

मल्टीमीडिया अंग्रेजी के मल्टी (Multi) तथा मीडिया (Media) शब्दों से मिलकर बना है। मल्टी का अर्थ होता है 'बहु' या 'विविध' और मीडिया का अर्थ होता है 'माध्यम'।

Multimedia - Multi + Media

मल्टीमीडिया - अनेक + संचार के साधन।

मल्टीमीडिया को समझने से पहले मीडिया को समझना होगा। मीडिया एक ऐसा माध्यम है जो समूचे जन समूह तक सूचना, शिक्षा और मनोरंजन आदि जानकारी को पहुँचाता है। मीडिया संचार का सबसे सरल और सक्षम माध्यम है क्योंकि इसके जरिये एक ही समय में असंख्य लोगों से जुड़ा जा सकता है। आज के आधुनिक युग में जहाँ ज्ञान, तथ्य, राजनीति और संस्कृति ही प्रत्येक व्यक्ति का औजार है तो इस स्थिति में मीडिया का कार्य और इसकी जरूरत दिन - प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

मल्टीमीडिया एक माध्यम है जिसके द्वारा विभिन्न प्रकार की जानकारियों को विविध प्रकार के माध्यमों जैसे कि टैक्सट (Text), ओडियो (Audio), ऐनीमेशन, वीडियो आदि का संयोजन (Combine) कर के छात्र / दर्शकों / श्रोताओं (Audience) तक पहुँचाया जाता है।

संचार के दो या दो से अधिक माध्यमों को किसी अधिगम या अनुदेशनात्मक प्रक्रिया में शामिल करना ही बहु - संचार कहलाता है। इसे बहु - माध्यम उपागम भी कहते हैं।

विश्वव्यापी संचार व्यवस्था में आई क्रांति ने शिक्षण - अधिगम के क्षेत्र में भी कई प्रकार के उपागमों को जन्म दिया है। हर उपागम में विभिन्न माध्यमों की सहायता से शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया चलाई जाने लगी है।

मल्टीमीडिया के प्रकार (Types of Multimedia) :— मल्टीमीडिया के कार्य करने के तरीकों को देखते हुए इसे मुख्यत: दो भागों में बाँटा गया है।

(1) Print Media / Graphic Media (प्रिंट मीडिया) :— इस मीडिया के माध्यम से जो जानकारी प्राप्त होती है वो लिखित रूप में या छपाई के रूप में मिलती है। इसके भी दो प्रकार होते हैं :-

(a) लिखित (Text) — इस माध्यम में जानकारी को लिखित रूप में हम तक पहुँचाया जाता है।

(b) चित्रित (Image) — चित्रित मीडिया में आप चित्र के माध्यम से जानकारी को समझ जाते हो।

(2) Digital Media — डिजिटल मीडिया को प्रसारित करने के लिए भी दो प्रकार होते हैं :—

(a) ऑडियो (Audio) — ऑडियो जानकारी का सबसे अच्छा माध्यम है - रेडियो, इसके अलावा Music आदि भी इसी में आते हैं। तात्पर्य यह है कि आप कोई भी आवाज सुनते हो तो वो ऑडियो मीडिया में आती है।

(b) विडियो (Video) — विडियो जानकारी में आप प्रतिदिन टेलीविजन पर समाचार देख सकते हो या इसके अलावा किसी फिल्म इत्यादि भी विडियो मिडिया का ही हिस्सा होती है।

मल्टीमीडिया के प्रयोग (Use of Multimedia) :—

शिक्षा के क्षेत्र में - विद्यार्थियों को आसानी के साथ कम से कम समय में शिक्षा प्रदान करने के लिए मल्टीमीडिया एक वरदान साबित हुई है।

व्यापार के क्षेत्र में :- व्यापार के क्षेत्र में व्यापारी विज्ञापन के लिए मल्टीमीडिया का प्रयोग करते हैं।

रचनात्मक उद्योगों में :- रचनात्मक उद्योग ज्ञान, कला, मनोरंजन, पत्रकारिता आदि के लिए मल्टीमीडिया का प्रयोग करते हैं।

खेल तथा मनोरंजन के क्षेत्र में :- यह तो हम सभी जानते हैं कि खेलों के लिए विडियो गेम्स के रूप में मल्टीमीडिया का प्रयोग अत्यंत लोकप्रिय है। सिनेमा जैसे मनोरंजन के क्षेत्र में स्पेशल इफेक्ट (effect) देने के लिए मल्टीमीडिया का प्रयोग किया जाता है।

ये तो मल्टीमीडिया के प्रयोग के मात्र कुछ ही उदाहरण हैं, परन्तु आज ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं होगा जिसमें Multi-Media का प्रयोग न किया जाता हो।

Q(8.) ई० - साधनों से आप क्या समझते हैं? इसकी चर्चा करें। एवं पाठ्यपुस्तक किसी अध्ययन की प्रमुख शाखा के लिए एक मानक पुस्तक है। इस कथन की व्याख्या करें।

Ans:- ई० साधन (E-Resources):- ई-साधन से अभिप्राय शिक्षण-अधिगम के लिए इलैक्ट्रोनिक माध्यम से प्राप्त होने वाली अधिगम सामग्री से है जो विद्यार्थी को कम्प्यूटर, मोबाइल फोन के माध्यम से आसानी से प्राप्त हो जाती है। ई० साधन के विभिन्न प्रकार हो सकते हैं जैसे - ब्लोग, वर्ल्ड वाइड वेब एवं सोशल नेटवर्किंग। ये साधन बच्चों के लिए आज अधिगम-शिक्षण प्रक्रिया को बहुत ही सरल एवं उचित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ये साधन इस प्रकार हैं:-

(1) कक्षा में कम्प्यूटर :- कक्षा में कम्प्यूटर होना एक शिक्षक के लिए खास होता है। कक्षा में एक कम्प्यूटर के साथ, शिक्षक एक नया पाठ प्रदर्शित करने, नयी सामग्री प्रस्तुत करने, नये प्रोग्राम का उपयोग समझाने और नयी वेबसाइट दिखाने में सक्षम होते हैं।

(2) कक्षा - वेबसाइट - अपने छात्रों के काम को प्रदर्शित करने का इससे बेहतर तरीका और क्या हो सकता है कि अपनी कक्षा के लिए डिजाइन किया हुआ एक वेब पेज बनाया जाये। अगर वेब पेज बन गया है तो, शिक्षक उस पर गृहकार्य, छात्र-कार्य, प्रसिद्ध उदाहरण, छोटे-मोटे गेम्स और भी बहुत कुछ पोस्ट कर सकते हैं।

(3) कक्षा ब्लॉग और विकी वेब - ई० के उपकरणों के कुछ प्रकार हैं जिन्हें कक्षाओं में क्रियान्वित किया जा रहा है। ब्लॉग से छात्रों को विचार, कल्पनाओं और कार्य, छात्र टिप्पणी और बार-बार दुहराने वाले प्रतिबिंब के लिए एक पत्रिका की तरह चल रहे संवाद को बनाए रखने की सुविधा मिलती है।

(4) वायरलेस कक्षा माइक्रोफोन (Wireless Class Microphone) - माइक्रोफोन की सहायता से छात्र अपने शिक्षकों को स्पष्ट सुनने में सक्षम होते हैं। बच्चे बेहतर सीखते हैं जब वे शिक्षक को स्पष्ट रूप से सुनते हैं। शिक्षकों के लिए लाभ यह है कि वे अब दिन के अंत में अपनी आवाज नहीं खोते।

(5) स्मार्टबोर्ड्स (Smart Boards) - स्मार्ट बोर्ड एक इंटरैक्टिव (Interactive) सफेद बोर्ड है जो कम्प्यूटर अनुप्रयोगों के लिए स्पर्श नियंत्रण प्रदान करता है। जो कुछ भी कम्प्यूटर स्क्रीन पर किया जा सकता है उसे दिखाने से कक्षा में अनुभव में वृद्धि होती है। यह न केवल दृश्य अधिगम में सहायक है, बल्कि यह परस्पर प्रभावी है ताकि छात्र उस पर चित्र बना सकते हैं, लिख सकते हैं आदि।

(6) ऑनलाइन मीडिया (Online Media) – कक्षा पाठ के संवर्धन हेतु वीडियो वेबसाइट का उपयोग किया जा सकता है। जैसे - युनाइटेड स्ट्रीमिंग, टीचर ट्यूब आदि।

पाठ्य-पुस्तक (Text Book)

प्राचीन काल में जब मुद्रण कला का विकास नहीं हुआ था। समस्त विषयों की शिक्षा मौखिक रूप से दी जाती थी। मुद्रण कला के साथ - साथ ज्ञान को पुस्तकों के रूप में संग्रहित करने के प्रयत्न हुए। शिक्षा के इतिहास में एक ऐसा भी समय आया कि इन पुस्तकों का अध्ययन ही शिक्षा समझा जाता था। विकास के पथ पर हम बढ़ते ही रहे, ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में हमने बहुत अधिक उन्नति की और आज ऐसी स्थिति में है, जब हम अपनी शिक्षा को बड़े व्यवस्थित ढंग से चलाते हैं। आज इसके उद्देश्य, पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियाँ सभी कुछ निश्चित है। आज शिक्षा को कई स्तरों शिशु, प्राथमिक, निम्न, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, विश्वविद्यालयों में बाँटा गया है और सभी स्तरों के लिए भिन्न-भिन्न पाठ्यचर्या (Curriculum) निश्चित की गई है। प्रत्येक स्तर की पाठ्यचर्या के आधार पर हमने उस स्तर का पाठ्य - विवरण (Syllabus) तैयार किया। अलग-अलग स्तरों के लिए पुस्तक का निर्माण हुआ है। इन पुस्तकों को हम पाठ्य - पुस्तकें कहते हैं।

इस प्रकार पाठ्यपुस्तकें वे पाठ्य हैं जो किसी स्तर के बच्चों के पाठ्यचर्या के अनुसार तैयार की जाती है। इसमें वे तथ्य एवं सूचनाएं संग्रहित होती है जिसका ज्ञान उस स्तर के छात्रों को देना चाहते हैं। आज की सम्पूर्ण शिक्षा पाठ्य-पुस्तकों पर ही आधारित है। आज यह शिक्षा के मुख्य साधन के रूप में प्रयोग की जाती है। बेकन के अनुसार – " पाठ्य पुस्तक किसी अध्ययन की प्रमुख शाखा के लिए एक मानक पुस्तक है।"

एक अच्छी पाठ्य पुस्तक के गुण – एक अच्छी पाठ्यपुस्तक ऐसी होनी चाहिए, जिसकी अत्यधिक उपयोगिता है, अध्यापक की मित्र है, विद्यार्थी की पथप्रदर्शक है, विद्यार्थियों की मानसिक आयु के अनुकूल है, उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप है, इस प्रकार पाठ्य पुस्तक कुछ विशेष गुणों से युक्त होनी चाहिए। सामान्य गुण, आकार, जिल्द, मुद्रण आदि से संबंधित होते हैं जबकि विशिष्ट गुण भाषा, दृष्टांत, शैली आदि से संबंधित होते हैं।

①(1.) विद्यालय से आप क्या समझते है? विद्यालय के प्रकार तथा विद्यालय शिक्षा के क्या उद्देश्य है?

Ans:- विद्यालय का अर्थ (Meaning of School) – 'स्कूल' शब्द यूनानी भाषा के शब्द 'स्कोले' से निकला है। जिसका अर्थ है - 'अवकाश के घर'। पहले यह उस स्थान को कहा जाता था, जहाँ यूनान के लोग अवकाश के समय बैठकर आपस में बातचीत करते थे, परन्तु धीरे-धीरे यह संस्था के रूप में परिवर्तित हो गए। हिन्दी में स्कूल को विद्यालय कहा जाता है जिसका अर्थ है - विद्या का घर। डी०वी० के अनुसार – "विद्यालय एक ऐसा विशेष वातावरण है, जहाँ जीवन के गुणों क्रियाओं और व्यवसायों की शिक्षा इस उद्देश्य से दी जाती है कि बालक का विकास इच्छित दिशा में हो।"

विद्यालय के प्रकार (Types of School)

(1) सरकारी स्कूल :- भारत सरकार, राज्य सरकार और ग्रामीण क्षेत्रों की स्थानीय स्वशासी संस्थाओं (पंचायत) और शहरी क्षेत्रों के निगम के निकायों द्वारा कई प्रकार के सरकारी स्कूल चलाए जाते है।

(a) औपचारिक सरकारी स्कूल - राज्य सरकारों द्वारा चलाए जाने प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्कूल।

(b) परिवर्ती स्कूल (परिवर्तन के समय बनाए गए स्कूल) – स्थानीय निकायों और राज्य सरकारों द्वारा प्रबंध किए जाने वाले शिक्षा गारंटी योजना के स्कूल, शिशु-शिक्षा केन्द्र, वैकल्पिक स्कूल आदि।

(c) ब्रिज कोर्स (आवासीय और गैर आवासीय) – स्कूल न पहुँच पाने वाले अधिक उम्र के बच्चों के लिए अल्पकालिक स्कूल ताकि वे अपनी उम्र के अनुसार ग्रेड / कक्षा तक पहुँच सके।

(d) वैकल्पिक स्कूल – 6 घंटे और 4 घंटे चलने वाला स्कूल और 'चल-स्कूल'।

(e) आश्रमशाला – आदिवासी बच्चों के लिए आदिवासी कल्याण मंत्रालय द्वारा वित्तीय समर्थन से चलाये जाने वाले औपचारिक आवासीय विद्यालय।

(f) आवासीय स्कूल - वंचित समूह जैसे - अनुसूचित जाति के लिए आवासीय स्कूल जो वंचित समुदाय के कल्याण के लिए संबंधित मंत्रालय के वित्तीय समर्थन से चलते है।

(g) केन्द्रीय विद्यालय – केन्द्र सरकार के कर्मचारियों (सशस्त्र सेनाओं सहित) के बच्चों के लिए जिनका स्थानान्तरण समूचे देश में कहीं भी हो सकता है।

(h) नवोदय विद्यालय – भारत सरकार द्वारा पूरी तरह से वित्तीय समर्थित और प्रबंधित तथा उत्कृष्टता के लिए चलाये जाने वाले आवासीय स्कूल।

(2) निजी विद्यालय :- इन सबके अलावा, सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ऐसे भी स्कूल है जिसका प्रबंधन निजी तौर पर किया जाता है, जिनमें से कुछ सरकार द्वारा अनुदान भी पाते है और बाकी अन्य को कोई अनुदान नहीं मिलता है।

(3) मुक्त विद्यालय और सेतु विद्यालय - राष्ट्रीय ओपन स्कूल के साथ शुरु होकर, कई राज्यों में काम कर रहे ओपन स्कूल बोर्ड विद्यार्थियों को कहीं अधिक और लचीले विकल्प दे पा रहे है।

वे चुनाव के लिए विषयों की जो श्रृंखला प्रस्तुत करते है वह काफी विस्तृत है। परीक्षा लेने के लचीले तरीके और दूसरे बोर्ड से प्राप्तांकों के स्थानांतरण की सुविधा के कारण मुक्त विद्यालय की प्रमाण-पत्र देने की प्रक्रिया काफी मानवीय है।

विद्यालयी शिक्षा के उद्देश्य - विद्यालय शिक्षा का उद्देश्य बच्चो का सर्वांगीण विकास करना है तथा शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करना है। रायबर्न के शब्दों में - "विद्यालय शिक्षा का उद्देश्य अपने विद्यार्थियों में ऐसे व्यक्तित्व का विकास करना है जो पूर्ण रूप से विकसित हो और जिसमें समन्वय भी हो। विद्यार्थी में अपनी रूचियों को यथावत रखने के साथ-साथ दूसरों के सहयोग से अपने आपको अभिव्यक्त करने की भी क्षमता हो।"

विद्यालय संगठन के जिन उद्देश्यों को निश्चित किया है वे निम्न है:-

(1) शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति करना।
(2) विद्यालय क्रियाओं में ताल मेल स्थापित करना।
(3) व्यापक दृष्टिकोण बनाना।
(4) प्रयोगात्मक ज्ञान प्रदान करना।
(5) प्रतिभाओं का विकास करना।
(6) छात्रों का सर्वांगीण विकास करना।
(7) कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाना।
(8) मूल्यों का विकास करना।
(9) विद्यालय के कार्यों को परिभाषित करना।
(10) छात्रों की शक्तियों को प्रोत्साहित करना।

उपरोक्त बिन्दुओं से ज्ञात होता है कि विद्यालय संगठन बालक को केन्द्र मानकर किया जाता है और वे उद्देश्य निश्चित किये जाते है, जिनसे बालक का सर्वांगीण विकास हो।

Q(10) विभिन्न अध्ययन विषयों की चर्चा करें।

Ans:- (क) दर्शन (Philosophy) - मनुष्य को स्वभाविक रूप से जिज्ञासु प्रवृति का माना गया है। मनुष्य को विकास से संबंधित घटनाओं, संस्कृति, इतिहास, आदि का विस्मय-कारी घटना चक्र मानसिक रूप से उद्वेलित करता है। वह जानना चाहता है कि इस प्रकार की मानसिक जिज्ञासाओं का हल क्या है? कौन सी शक्तियाँ अथवा कारण हैं जो इसके पीछे उत्तरदायी है। इसके लिए मनुष्य तर्क-वितर्क, विचार-विमर्श, अनुभव आदि का सहारा लेता है। इसी प्रक्रिया को दर्शन का आरंभिक बिन्दु माना गया है।

दर्शन सत्य की खोज है, दार्शनिकों ने भी विविध रूपों में व्यक्त किया है।

(ख) मनोविज्ञान (Psychology) - मनोविज्ञान एक निश्चित विज्ञान है जो प्राणी के भौतिक तथा सामाजिक दोनों ही प्रकार के व्यवहारों का अध्ययन करता है। मनोविज्ञान का उद्देश्य मानव अथवा पशु के व्यवहारों के कारणों की खोज करना तथा मानव अथवा पशु स्वभाव का भलीभांति अध्ययन करना है क्योंकि प्राणी का व्यवहार उसकी मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है तथा बाह्य व्यवहार वास्तव में विचारों की बाह्य अभिव्यक्ति मात्र है, इसलिए मनोविज्ञान प्राणी के अन्तर्मन का भी अध्ययन करता है। मनोविज्ञान, व्यवहार का अध्ययन करता है तो प्रश्न उठता है कि व्यवहार क्या है? वास्तव में मनुष्य अथवा प्राणी जो कुछ भी प्रतिक्रियायें करता है वे ही उसका व्यवहार है। जेम्स ड्रेवर के अनुसार -" जीवन की संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के प्रति मनुष्य अथवा पशु की सम्पूर्ण प्रतिक्रिया ही व्यवहार है।"

(ग) समाजशास्त्र (Sociology):- समाज शास्त्र अर्थात समाज का शास्त्र। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट होता है कि वह शास्त्र जो कि समाज का अध्ययन करे। अतः जो शास्त्र समाज के इतिहास, संरचना, विकास, गतिशीलता अथवा समाज को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या करे, समाज शास्त्र कहलाता है।

'समाजशास्त्र' शब्द का प्रयोग सबसे पहले एक फ्रांसिसी दार्शनिक ऑगस्ट कौंत ने 1838 में किया था। 'Sociology' शब्द और उस विषय के जन्मदाता ऑगस्त कौंत है। इसलिए उन्हें समाज शास्त्र का जनक कहा जाता है।

इस प्रकार समाज शास्त्र सामाजिक जीवन समूहों के परस्पर संबंधों तथा सामाजिक व्यवहार का अध्ययन है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सामाजिक जीवन को समझने के लिए समाज शास्त्र या सामाजिक समूहों, समुदायों और संस्थाओं का अध्ययन करता है। गिन्सबर्ग के अनुसार -" समाज-शास्त्र समाज के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"